VISION IAS

www.visionias.in

VISION IAS M N 04 AUG 2023 RECEIVED

ESSAY

Name of Candidate	Arpit kumar.					Test Code	2320.
Medium Hindi/Eng.	Hindi	Registration Number	5	4	6	7	0	5
Centre	Mukharjee Nagar	Date	0 4	0 8	2	0	2 3

INDEX TABLE

Section	Maximum Marks	Marks Obtained
A	125	
B	125	
Total Marks Obtained:		

Important Instructions

1. The ESSAY must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Question-cum-Answer (QCA) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in a medium other than the authorized one.

   प्रवेश–पत्र में प्राधिकृत माध्यम में **निबन्ध** लिखना आवश्यक है तथा इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न–सह–उत्तर (क्यू.सी.ए.) पुस्तिका के मुखपृष्ठ पर निर्दिष्ट स्थान पर करना आवश्यक है। प्राधिकृत माध्यम के अलावा अन्य माध्यम में लिखे गए उत्तरों पर अंक नहीं दिए जाएंगे।

2. Word limit, as specified, should be adhered to.

   प्रश्नों के उत्तर निर्दिष्ट शब्द–संख्या के अनुसार होने चाहिए।

3. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

   प्रश्न–सह–उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़े गए किसी पृष्ठ अथवा पृष्ठ भाग को पूर्णतः काट दीजिए।

Remarks:

General Instructions

1. Do furnish the appropriate details in the answer sheet (viz. Name, Registration Number and Test Code).

   उत्तर पुस्तिका में सूचनाएं भरना आवश्यक है (नाम, प्रश्न–पत्र कोड, विद्यार्थी क्रमांक इत्यादि)।

2. Write **two** essay, choosing **one** topic from each of the Sections A and B, in about 1000-1200 words each.

   खण्ड A व B प्रत्येक से **एक** विषय चुनकर **दो** निबन्ध लिखिए, जो प्रत्येक लगभग 1000–2000 शब्दों का हो।

3. Do not write answers in bad of illegible handwriting. Such answer may not be evaluated.

   उत्तर अस्पष्ट अथवा गन्दी लिखावट में न लिखें। इस प्रकार के उत्तरों का मूल्यांकन नहीं भी किया जा सकता है।

4. Write answers in ink only. Do not use pencil for writing the answer. However, pencil may be used for drawing diagrams, sketches, etc.

   उत्तर स्याही से ही लिखें। उत्तर लिखने के लिए पेंसिल का उपयोग न करें। हालांकि आरेख, चित्र इत्यादि बनाने के लिए पेंसिल का उपयोग किया जा सकता है।

5. Do not write answers in a medium other than the authorized medium in the Admission Certificate. Do not use mixed language, i.e., authorized and unauthorized media together, for writing answers.

   प्रवेश–पत्र में उल्लेख किए गए माध्यम के अलावा अन्य किसी माध्यम में उत्तर न लिखें। अधिकृत और अनधिकृत की मिली–जुली भाषा का भी उपयोग न करें।

6. Write answers at the specified spaces (right below the questions) only. Answers written elsewhere at unspecified spaces in the Booklet shall not be evaluated.

   प्रश्नों के उत्तर ठीक उसके नीचे दिए गए निर्धारित स्थान पर ही लिखें निर्धारित स्थान के अलावा किसी अन्य स्थान पर लिखे गए उत्तर का मूल्यांकन नहीं किया जाएगा।

Students must not write on this page.
उम्मीदवारों को इस पृष्ठ पर नहीं लिखना चाहिए।

EVALUATION INDICATORS

1. Contextual Competence
2. Structure and Flow
3. Dimensional Coverage
4. Language Competence
5. Length of Essays
6. Creativity Competence

Overall Macro Comments / feedback / suggestions on Answer Booklet:

Students must not write on this page.
उम्मीदवारों को इस पृष्ठ पर नहीं लिखना चाहिए।

Evaluation Parameters

- Understanding of Topic
- Introduction Competence
- Body of Essay
    - Dimensions Covered
    - Shortcomings
    - Value Additions/ Missed Dimensions
- Conclusion Competence
- Organization of Essay
- Language and Expression

Macro Comments – Essay 1

Essay Topic:

Students must not write on this page.

उम्मीदवारों को इस पृष्ठ पर नहीं लिखना चाहिए।

Students must not write on this page.

उम्मीदवारों को इस पृष्ठ पर नहीं लिखना चाहिए।

Students must not write on this page.
उम्मीदवारों को इस पृष्ठ पर नहीं लिखना चाहिए।

Macro Comments – Essay 2

Essay Topic:

Students must not write on this page.
उम्मीदवारों को इस पृष्ठ पर नहीं लिखना चाहिए।

Students must not write on this page.

उम्मीदवारों को इस पृष्ठ पर नहीं लिखना चाहिए।

All the Best

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

खण्ड–A / SECTION–A

जब प्रेम की शक्ति, शक्ति के प्रेम पर विजय प्राप्त कर लेगी तो दुनिया को शांति का पता चल जाएगा।

महात्मा गांधी की ये पंक्तियाँ प्रेम, शक्ति तथा शांति की अन्योन्याश्रिता को उद्घाटित करती हैं। हम इन पंक्तियों के कथ्य को निम्न प्रसंग के माध्यम से समझ सकते हैं। बीसवीं सदी में भारत, एक औपनिवेशिक राष्ट्र तथा जर्मनी, एक औद्योगिक व साम्राज्यवादी राष्ट्र में कोई विशेष समानता नहीं थी। हालांकि भारत में मोहनदास करमचंद गांधी तथा जर्मनी में एडोल्फ हिटलर अनेक समानताएँ साझा करते हैं।

दोनों ही अपने अपने राष्ट्र को नेतृत्व प्रदान करते हैं; जनता के समक्ष सम्माननीय दर्जा हासिल करते हैं। यह दो समानताएँ दोनों के व्यक्तित्व को एक रेखा

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

पर नहीं ला सकीं। हिटलर जिसने जनता के विश्वास की शक्ति का दुरुपयोग किया, जर्मनी को द्वितीय विश्व युद्ध का महत्वपूर्ण कारक बनाया। वहीं गांधी ने सत्याग्रह, असहयोग तथा अहिंसा जैसे प्रेममूलक मूल्यों को आधार बनाकर भारत की स्वतंत्रता की लड़ाई में निर्णायक भूमिका निभायी।

उपर्युक्त प्रसंग से शीर्षक को आसानी से समझा जा सकता है जहाँ हिटलर ने शक्ति से प्रेम किया वहीं गांधी ने प्रेम की शक्ति से। परिणामस्वरूप एक द्वितीय विश्व युद्ध का कारण बना तो दूसरा भारत जैसे शांतिप्रेमी राष्ट्र का राष्ट्रपिता।

मानव जीवन के प्रारंभ से ही शक्ति मानवीय संबंधों का यथार्थ रही है। कभी हमने भूख मिटाने के लिये आग का प्रयोग किया तो कभी विकास के लिये भाप इंजन का। चूँकि शक्ति

और अधिक शक्ति हासिल करना चाहती है तो हमने परमाणुबमों को हासिल किया। शक्ति से प्रेम करना मानव का स्वाभाविक गुण है या नहीं इस बहस पर न पड़ते हुये हम यह जरूर देख सकते हैं कि इस अतार्किक शक्ति के कुपरिणाम भी सामने आये हैं।

औद्योगिक क्रांति ने जहाँ श्रमिकों के लिये पृथ्वी में ही नरक का दरवाजा खोला वहीं हिरोशिमा, नागासाकी के भयावह दृश्य आज भी मन को विचलित करते हैं। यह आज भी निर्बाध रूप से घटित हो रहा है जहाँ चीन विश्व की दूसरी बड़ी शक्ति होने के नाते अपने पड़ोसी राज्यों की संप्रभुता का उल्लंघन कर रहा है तो यूक्रेन, रूस से अपनी अस्मिता की रक्षा कर रहा है।

बीसवीं सदी के प्रसिद्ध दार्शनिक हॉब्स ने माना था कि मनुष्य स्वभाव से स्वार्थी होता है। वह शक्ति प्रेमी है

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

और अधिकाधिक शक्ति हासिल करना उसका लक्ष्य है। बीसवीं सदी में ही भारतीय चिंतक गांधी ने इसके विपरीत विचार दिये। उनका मानना था कि असीम शक्ति की कल्पना मानवता को कहीं नहीं ले जायेगी। अत: समाज में व्यक्तिगत जीवन में शांति हेतु हमें प्रेम की आवश्यकता है; प्रेम की शक्ति में विश्वास करने की आवश्यकता है।

महात्मा बुद्ध, मदर टेरेसा, कन्फ्यूशियस आदि सभी ने महात्मा गांधी के इस विचार को साझा किया है। मूर्त रूप में, इतिहास का अध्ययन करने पर हम पाते हैं कि भुखमरी तथा अकाल जैसे संकटों की परिणति प्राय: गृहयुद्धों में होती है। भारत 1960 के दशक के मध्य में खाद्यान्न संकट का सामना कर रहा था किंतु यहाँ यह गृहयुद्ध में परिणत नहीं हुआ। भारत में यह

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

अपेक्षाकृत त्याग तथा सौहार्द को लेकर आया जहाँ प्रत्येक नागरिक दूसरे नागरिक के लिये एक वक्त का उपवास करने को तैयार था। यह संभव हुआ क्योंकि भारत के प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री तथा भारत के लोगों ने उस समय प्रेम की शक्ति पर अटूट विश्वास रखा था। वे हॉब्स के अनुसार स्वार्थी और शक्ति के प्रेम में लिप्त नहीं हुये।

शांति प्रत्येक व्यक्ति, राष्ट्र, समाज तथा विश्व का अंतिम लक्ष्य है। यह लक्ष्य प्राप्त करने के लिये हमने हर स्तर में प्रयास किये हैं। हमारे पास शांति की स्थापना हेतु राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय संस्थाएँ हैं। राष्ट्र के स्तर पर कुछ राष्ट्रों ने शांति की स्थापना हेतु शक्ति का निवारक के रूप में उपयोग किया है। यथा- अमेरिका, रूस अपने शस्त्रीकरण के पीछे यही कारण देते हैं कि यह युद्ध को रोकेगा और अंततः शांति कायम

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

होगी। दुर्भाग्यवश शस्त्रीकरण की यह होड़ इन राष्ट्रों तक सीमित नहीं रहती। यह राष्ट्र की मूल इकाई व्यक्ति को भी अपनी चपेट में लेती है। परमाणु शक्ति संपन्न देशों में हिंसा की घटनाएँ उन देशों से अधिक होती हैं जो शिक्षा, स्वास्थ्य आदि की शक्ति पर विश्वास रखते हैं। भूटान, स्कैंडिनेवियन देश अपेक्षाकृत अमेरिका, रूस आदि से कम हिंसा का सामना करते हैं।

मनु औरों को हँसता देखो, हँसो और सुख पाओ।
अपने सुख को विस्तृत कर लो सभी को सुखी बनाओ ॥

प्रेम की शक्ति, परमाणु हथियारों, शस्त्रीकरण, अपार धन संपदा, सोशल मीडिया में समर्थक आदि से उच्चतर है। प्रेम की शक्ति का मूल्य हम तभी समझ पायेंगे जब हम यह जानेंगे कि प्रेम क्या है? क्या प्रेम किसी की इच्छा करने तक ही सीमित है या यह

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

इससे कहीं अधिक है। जिस प्रकार शांति सर्वोत्तम लक्ष्य है उसी प्रकार प्रेम उस सर्वोत्तम लक्ष्य को प्राप्त करने का सर्वोत्तम माध्यम है। रामायण का एक प्रसंग है कि भरत ने अपने बड़े भाई राम की चरण पादुकाओं के माध्यम से आयोध्या का शासन किया। अर्थात प्रेम त्याग है, वह सर्वार्थ की भावना से मिलकर बनता है। महात्मा गांधी ने प्रेम को अपेक्षा रहित माना है। वह सिर्फ देने की वस्तु है न कि अपेक्षा करने की।

अब यह स्वाभाविक ही है कि जब हर व्यक्ति प्रेम से परिपूरित होगा, प्रेम की शक्ति से प्यार करेगा तो शक्ति के प्रेम के लिये जगह कहीं होगी तो वह इतिहास के पन्नों में।

वर्तमान समय में राष्ट्रीय सीमाओं को लाँघते हुये एक घटना का उदय हुआ है। वह है सांप्रदायिक हिंसा। यह सांप्रदायिक हिंसा भारत के मणिपुर। हरियाणा

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

तथा फ्रांस, ब्राजील, संयुक्त राज्य अमेरिका हर जगह व्याप्त है। हर जगह की नफरती हिंसा का तात्कालिक कारण अलग अलग है किंतु सभी का मूल एक ही है - शक्ति का प्रेम।

किंतु अगर हमें मानवता की प्रगति को अक्षुण्ण रखना है, हम शांति चाहते हैं या स्वास्थ्य, शिक्षा, पर्यावरण की सुरक्षा चाहते हैं तो हमें प्रेम की शक्ति पर विश्वास करना ही होगा।

शांति स्वयं में कुछ नहीं है वह अच्छी शिक्षा, सार्वभौमिक स्वास्थ्य, महिलाओं के प्रति हिंसा की अनुपस्थिति तथा विषमताओं का अभाव है। एक कल्याणकारी राज्य का यह दायित्व है कि वे अपने राज्य में इन मूलभूत आवश्यकताओं को उपलब्ध कराये क्योंकि यही सब मिलकर शांति को आकार देते हैं।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

व्यक्ति समाज का एक अभिन्न अंग है, यह उसी का दायित्व है कि वह अगर बहुसंख्यकों का हिस्सा है तो उसके कार्य से किसी अल्पसंख्यक को असुरक्षा महसूस नहीं होनी चाहिए। अगर मणिपुर के हर व्यक्ति ने यह महसूस किया होता और प्रेम की शक्ति पर विश्वास रखते तो स्थिति आज कुछ और होती।

यून-वीमेन के अनुसार भारत की एक तिहाई महिलाओं को परिवार में हिंसा का सामना करना पड़ता है। परिवार वह स्थल है जहाँ हम सबसे अधिक सुरक्षित होते हैं फिर यह तथ्य हमें असंगत प्रतीत क्यों नहीं होता? क्योंकि भारतीय परिवार पितृसत्तात्मक शक्ति से प्रेम करते हैं न कि प्रेम की शक्ति से।

आज अपेक्षाकृत साक्षर समाजों में हिंसा का विषय वाहनों की पार्किंग, महिलाओं की वेश-भूषा आदि होते हैं

ऐसे समय में हमारे निबंध का शीर्षक किसी भी काल से अधिक प्रासंगिक हो चुका है। आज प्रत्येक व्यक्ति उपभोक्तावाद तथा शक्ति की मिथ्या चेतना से चालित है। समाज, राष्ट्र तथा दुनिया में फैल रही अशांति का यह प्रमुख कारण है।

वर्तमान में हम उस टिपिंग प्वाइंट पर पहुँच चुके हैं जहाँ अब अगर हमने प्रेम के मूल्य को नहीं पहचाना, संगठन की एकता में विश्वास नहीं किया तो हम वहीं पहुँच जायेंगे जहाँ से हमने प्रारंभ किया था अर्थात आदिम अवस्था।

प्रेम की शक्ति में यह क्षमता है कि वह प्रशासन में जनता का विश्वास उत्पन्न कर सके, यह विश्वास संसाधनों की गुणवत्ता में वृद्धि करेगा। प्रेम की शक्ति परिवार के ढाँचे को और अधिक

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

लोकतांत्रिक बना सकती है जहाँ पितृसत्ता की जगह स्वतंत्रता, समानता तथा भाईचारे के मूल्य स्थापित होंगे।

प्रेम की शक्ति में वह संभावना निहित है जो विभिन्न संप्रदायों- धर्मों को एक साथ ला सकती है। पर्यावरण क्षरण, उभरती विषमता, अलगाववाद आदि सभी समस्याओं के समाधान के लिये सभी धर्मों को एक साथ आना ही होगा।

पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ, पंडित भआ न कोय
ढाई आखर प्रेम का पढ़े सो पंडित होय ॥

मेरा पड़ोसी मेरा अनिवार्यतः प्रतिद्वंद्वी है, चूँकि संसाधन कम है अतः हमें प्रतिस्पर्धा ~~करना~~ करनी ही होगी; इसे हराकर ही मैं जीत सकता हूँ; यह शक्ति के प्रेम के विचार है। प्रेम की शक्ति पड़ोसी को प्रतिद्वंद्वी नहीं बल्कि स्वाभाविक सहयोगी के रूप में

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

देखती हैं; फिर चाहते वह घर के पास का पड़ोस हो यह राष्ट्र का पड़ोस या धर्म और विचारधारा का पड़ोस।

हर पीढ़ी को यह निर्णय लेना पड़ता है कि वह अपनी जरूरतों के लिये कौन सा विकल्प चुनेगी। शांति हर काल की जरूरत रही है किंतु वर्तमान में सांप्रदायिक हिंसा के घाव, पर्यावरण क्षति तथा असमानता की पीड़ा ने शांति को और अधिक काम्य बना दिया है। एक शांति वह होती है जो समाज को निर्जन बना कर प्राप्त की जाती है दूसरी समाज के साथ। समाज, राष्ट्र, व्यक्ति सभी स्तरों पर हमें आवश्यकता है कि प्रेम के मूल्य पर हम अडिग रहे और प्रेम की शक्ति के माध्यम से अपने बीच शांति कायम करें।

"मानुस प्रेम भएउ बैकुंठी नाहि ते काह द्वार एक मूँठि।"

मैं अकेले दुनिया को नहीं बदल सकता, लेकिन मैं कई लहरें पैदा करने के लिए पानी में एक पत्थर फेंक सकता हूँ।

तुम्हारे दिल की भी चुभन जरूर कम होगी
किसी के पैर का काँटा निकाल कर तो देखो

क्या होता अगर नेल्सन मंडेला ने रंगभेद के विरुद्ध आवाज न उठायी होती? क्या होता अगर लोकमान्य तिलक ने स्वराज और स्वदेशी के विचार को न जिया होता? क्या होता अगर साइमन दि बउआ ने महिलाओं तथा उनके शोषण के लिये आवाज मुखर न की होती? क्या होता अगर सचिन तेंदुलकर भी मैच फिक्सिंग का हिस्सा बन जाते? क्या होगा अगर मैं अपनी अंतरात्मा की आवाज नहीं सुनूँगा? क्या होगा

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

अगर समाज का हर व्यक्ति अपनी जिम्मेदारी का निर्वहन नहीं करेगा ?

इन सभी क्या होगा का उत्तर हम आगे प्राप्त करने का प्रयास करेंगे किंतु उससे पहले हमें "मैं" की क्षमताओं से परिचित हो लेना चाहिए। किसी विचारक ने यह कहा है कि दुनिया कुछ और नहीं बल्कि कभी न हार मानने की जिजीविषा रखने वाले लोगों का इतिहास मात्र है।

आज हम लगभग आठ बिलियन के करीब हैं किंतु आठ बिलियन इतने महत्वपूर्ण नहीं हैं जितना कि वह एक व्यक्ति जिससे मिलकर आठ बिलियन का निर्माण होता है। समाज, राष्ट्र तथा विश्व का आधार वह एक व्यक्ति है जो इस समय खेल रहा होगा, पढ़ रहा होगा हो सकता है अपनी आजीविका के लिये रिक्शा चला रहा हो। यह भी नितांत संभव है कि वह

किसी शक्तिशाली राष्ट्र का प्रमुख हो या वह किसी शक्तिशाली कंपनी का सी.ई.ओ.।

इन सभी में एक आश्चर्यजनक समानता है कि ये सभी एक विचार हैं, एक रिक्शाचालक भी और एक राष्ट्र का प्रतिनिधि भी। इन सभी के कार्यों से यह जगत आकार ग्रहण करता है किंतु किसी एक के द्वारा यह उतना प्रभावित नहीं होता जितना कि इन सभी के द्वारा।

अकेले दुनिया को बदलना अति महत्वाकांक्षी स्वप्न है और जो इसमें सक्षम होते हैं वे युग प्रणेता बन जाते हैं। हम यहाँ उस आम आदमी की बात करेंगे जो सहज और स्वाभाविक रूप से अपने कर्तव्यों का निर्वहन करते हुये बड़े परिवर्तनों को अंजाम देने या उनकी शुरुआत करने में समर्थ होता है।

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

प्रकृति में हर इकाई की स्वतंत्र सत्ता है फिर चाहे वह पशु हो या मानव। अंतर मात्र इतना है कि मानव चेतनायुक्त प्राणी है अतः वह लहरों को पैदा कर सकने में समर्थ होता है। हालांकि व्यक्ति अपनी इस सत्ता का प्रयोग तभी किसी परिवर्तन के लिये कर सकता है जब उसमें सामाजिक बोध हो, करुणा जैसे मूल्य उसके व्यक्तित्व को आकार देते हों तथा वह संवेदन-शील हो।

मध्यकाल में जब संपूर्ण भारत सामंतवादी चेतना में जकड़ा हुआ था तब कबीरदास जैसे व्यक्ति भी थे जो अपने सामाजिक बोध से परिचित थे -

सुखिया संसार है खावे अरु सोवे
दुखिया दास कबीर है जागे अरु रोवे॥

अर्थात चूँकि अधिकांश व्यक्ति अपने सामाजिक बोध से विलग हैं

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

अतः वे संतुष्ट सुअर की भाँति सो रहे हैं किंतु कबीर अपनी सामाजिक चेतना से युक्त होने के कारण सामाजिक कुप्रथाओं पर चिंतित हैं।

दुनिया में अपनी भूमिका का निर्वहन करने अपने मानव होने के अहसास को महसूस करने के लिये यह सामाजिक बोध/ उत्तरदायित्व की भावना होना अत्यंत आवश्यक है।

आज भारतीय विद्यालयों में हर बच्चे को अभिमन्यु की प्रेरणा दी जाती है। यह मात्र इसीलिये क्योंकि अभिमन्यु महाभारत में धर्म के प्रति अपनी जवाबदेही से अवगत थे। वह यह जानते थे कि भले ही परिणाम उनके पक्ष में न आये किंतु अपने प्रयास से वे अपने योद्धाओं में एक ऊर्जा का संचार कर सकेंगे।

वर्तमान में कल्याणकारी भारत राज्य के सपने की जिम्मेदारी उसके प्रशासन पर है। भारतीय प्रशासन अनेक समस्याओं

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

से ग्रसित है यथा- प्रक्रिया को अनावश्यक महत्व, भ्रष्टाचार, पारदर्शिता तथा जवाबदेहिता की कमी। अगर प्रत्येक प्रशासक यह सोचेगा कि वह सभी समस्याओं का समाधान कर देगा तो शायद एक भी समस्या का समाधान न निकले। यदि वह सिर्फ अपने विभाग में परिवर्तन ला सके, जो सहजता के साथ व्यावहारिक भी है, तो यह अन्य विभागों के लिये भी प्रेरणार्थक होगा। अंतत: सभी समस्याओं का समाधान प्राप्त हो सकेगा।

समाजशास्त्रियों का मानना है कि मानव अनुकरणीय प्राणी है, अर्थात वह सिद्धांतों की अपेक्षा कार्य-परिणाम से प्रेरित होता है। शायद यही कारण है कि मार्क्स की जगह समाजवाद के विचार को मूर्त रूप देने में लेनिन को अधिक सफलता मिली। लेनिन ने सिर्फ अपने देश में समाजवाद को मूर्त रूप दिया था और उसकी लहरें इतनी फैलीं

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

कि संपूर्ण विश्व में उसका प्रसार हुआ।
मैं अकेला ही चला था जानिब-ए-मंजिल।
मगर, लोग साथ आते गए और कारवाँ
बसता गया॥

अर्थात एक व्यक्ति, दूसरे को देखकर प्रेरित होता है और वह फिर एक समूह का आकार ले लेता है।

एक प्रसिद्ध बॉलीवुड चलचित्र है- 'नायक'। इसमें अनेक सुरक्षा खतरों के बावजूद एक अकेला व्यक्ति अपने वोट देने के अधिकार की रक्षा के लिये वोट देने जाता है। अंततः पूरा गाँव उससे प्रेरित होकर अपने वोट के अधिकार तथा लोकतंत्र की रक्षा करता है।

भारत के पूर्वी अँचल के दशरथ माँझी ने दुनिया बदलने का प्रण नहीं लिया। उन्होंने मात्र अपने गाँव के स्वास्थ्य के अधिकार की रक्षा के लिये बिना किसी से उम्मीद किये हुये पत्थरों को

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

चीरकर एक रास्ता बना दिया। आज उनसे प्रेरणा लेकर सरकार तथा व्यक्ति दोनों स्तरों पर ग्रामीण भारत की स्वास्थ्य सुविधाओं से कनेक्टिविटी मजबूत की जा रही है।

आज हमारे सामने अस्तित्व के संकट के रूप में पर्यावरण क्षरण का संकट उपस्थित है। विश्व भर की सरकारें अपना काम कर रही हैं किंतु क्या मेरा और हम सभी का फर्ज नहीं बनता कि हम अपनी सहभागिता सुनिश्चित करें। अगर प्रत्येक व्यक्ति उर्जा का उपभोग आवश्यकतानुसार करे, प्लास्टिक की जगह कपड़े के थैलों का इस्तेमाल करे तो वास्तव में लहरें भी पैदा होगीं और दुनिया भी बदली जा सकती है।

कौन कहता है आसमाँ में सुराख हो नहीं सकता
एक पत्थर तो तबियत से उछालो यारों।।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

अब हम अपने निबंध के प्रारम्भ में उठाये गये प्रश्नों पर लौटते हैं। अगर नेल्सन मंडेला यह सोचते कि मात्र मेरे प्रयास से रंगभेद की समाप्ति नहीं होगी तो आज यह कुप्रथा और प्रचंड रूप में मौजूद होती। भले ही नेल्सन मंडेला ने दुनिया न बदली हो किंतु उन्होंने सागर में अनेक लहरें पैदा की जो सुनामी लाने के लिये अर्थात परिवर्तन के लिये पर्याप्त थीं।

अगर लोकमान्य तिलक ने स्वदेशी व स्वराज का विचार न दिया होता तो भारत महात्मा गांधी, भगत सिंह व सुभाष चंद्र बोस जैसे महान विभूतियों से वंचित होता। तिलक का स्वप्न दुनिया बदलने का नहीं था किंतु उनके व्यक्तिगत प्रयास ने वह श्रृंखला कायम की जिसने अंत में दुनिया के नक्शे से उपनिवेशवाद को खत्म किया।

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

मेरे सीने में न सही तो तेरे सीने में ही सही
हो कहीं भी आग किंतु आग जलनी
चाहिए॥

प्रसिद्ध हिंदी गजलकार दुष्यंत की ये पंक्तियाँ इसी भाव को व्यक्त कर रही हैं कि परिवर्तन की यह श्रृंखला, यह लहर कायम रहनी चाहिए। मैं रहूँ या न रहूँ॥

साइमन दि बउआ अगर यह सोचती कि हर महिला के साथ भेदभाव हो रहा तो मैं ही क्यूँ विरोध करूँ तो शायद आज यह विश्व इतना समावेशी न होता। भले ही बउआ दुनिया को अकेले न बदल पातीं किंतु उनके विचारों और कार्यों ने एक श्रृंखला को जन्म दिया जो किसी भी परिवर्तन हेतु पर्याप्त था।

आज अगर भारतीय क्रिकेट, फिक्सिंग जैसे कुप्रथाओं से मुक्त है तो

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

यह सचिन जैसे उन सभी खिलाड़ियों की वजह से संभव हुआ जिन्होंने अपनी जिम्मेदारी का निर्वहन किया।

परिवर्तन प्रकृति का एकमात्र स्थायी अवयव है। किंतु अपरिवर्तनवादी शक्तियाँ अपनी जड़ों को समय के साथ मजबूत कर चुकी होती हैं। यह प्रायः संभव नहीं होता कि एक व्यक्ति समस्या का निराकरण कर दे ऐसी समस्यायें जो युगों से व्याप्त हैं और सार्वकालिक भी हैं। यह व्यक्ति को हतोत्साहित भी करता है, तभी हमें आवश्यकता है कि हम अपने अस्तित्व को पहचानें, अपनी जिम्मेदारी को समझें। शीर्षक के कथ्य के अनुरूप हमें दुनिया बदलने की शुरुआत नहीं करनी, हमें खुद को, अपने परिवेश को बदलना है तथा हो सके तो कुछ को प्रेरित करना है क्योंकि -

समर शेष है नहीं पाप का भागी केवल व्याध
जो तटस्थ हैं, समय लिखेगा उनका भी अपराध ॥

तुम्हारे दिन   मनु
भी भी SPACE FOR ROUGH WORK

सौहार्द
स्वास्थ्य
शिक्षा
पर्यावरण, gender.

((प्रेम. शक्ति. शांति))

२०वीं सदी में < हिटलर ⇒ misuse of power.
गांधी. < असहयोग / सत्याग्रह / सविनय अवज्ञा.

define भी करूँगा.

international :) U.S., Russia :). स्कैंडिनेवाई. भूटान.

national :). — — भारत.
(+)
political :) लाल बहादुर शास्त्री :). भूख संकट को दूर किया.
वहीं कई राष्ट्रों में यह
civil war.

मणिपुर. हरियाणा. फ्रांस. पाकिस्तान.
ब्राजील. अफ्रीका.

Society :). hate Crimes.
अफवाह. कुत्ते पर war.
संवेदनहीनता

Religion :). टकराहट - अनिवार्य टकराहट.

Administration :) आपदाओं के दौरान सहयोग
प्रशासन में विश्वास
संस्थाओं में वृद्धि.

Competition :).

Environment :).

Co-operation :).

tulsi गौड़ा

SPACE FOR ROUGH WORK

जल

मांझी

मैं अकेले दुनिया को नहीं बदल सकता

यह दुनिया कुछ और नहीं कभी न हार मानने वाले लोगों का इतिहास मात्र है।

न्यूटन

मांझी दशरथ

अभिमन्यु

गांधी

बिस्मार्क

अंबेडकर

मंडेला

लिंकन

सायना दिखवाल

आपातकाल

मंडेला

तिलक

क्या होता अगर ?

मैराथन में पसीना तैरे लोग में भी पसीना बोलना ही

- संस्कृति
- अर्थव्यवस्था
- समाज
- राजनीति
- प्रशासन
- धर्म
- खेल

प्रेरणा

युद्ध, भूगोल

अकबर → प्रशासन

Kiran bedi

- स्वास्थ्य
- भाषा
- पुलिस
- सह्योग
- पर्यावरण
- मानवीय उद्यम

SPACE FOR ROUGH WORK

SPACE FOR ROUGH WORK